PK टाइम्स

लोक टुडे

विश्वसनीय खबरों का सर्वश्रेष्ठ अखबार

pktimesnews.com
loktodaynews.com
PK Times News
thepktimesofficial
pk_timesofficial

वर्ष: 12 | अंक: 292 | मूल्य: 1.00 रुपए | पृष्ठ: 4 | शुक्रवार, 08 मई, 2026 | RNI No. RAJHIN/2013/50649

राजस्थान के नायक

थड़ी पर चर्चा, खाट पर फ़ैसला

अब जनता के बीच ही लगती है 'सरकार', सादगीपूर्ण कार्यशैली से सीएम दे रहे सीधा संदेश

मनोहरसिंह खोखर। जयपुर

राजस्थान की राजनीति में अक्सर नेताओं के काफिले और वीआईपी कल्चर की चर्चा होती है, लेकिन मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अपनी एक अलग ही पहचान बनाई है। हाल ही में उनकी सादगी के कई ऐसे उदाहरण सामने आए हैं, जहाँ वे बिना किसी बड़े तामझाम और सुरक्षा के घेरे को सीमित रखते हुए सीधे आम जनता के बीच पहुँच गए। एक तरफ जहाँ पचपदरा विधायक अरुण चौधरी जैसे नेताओं के जनता के साथ कथित दुर्व्यवहार की खबरें चर्चा में हैं, वहीं मुख्यमंत्री का यह 'जन-जुड़ाव' लोगों के बीच नई उम्मीद जगा रहा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा अपनी सादगी और बिना वीआईपी तामझाम के जनता के बीच जाने के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने सत्ता संभालने के बाद से ही कई बार आम आदमी की तरह लोगों से सीधे संवाद किया है। मुख्यमंत्री अक्सर जयपुर के सार्वजनिक पार्कों में बिना किसी भारी सुरक्षा प्रोटोकॉल के सैर करते देखे जाते हैं। राजस्थान की जनता अब यह देख रही है कि एक तरफ 'सत्ता का अहंकार' है और दूसरी तरफ 'सादगी का संकल्प'। मुख्यमंत्री का यह सादगी भरा अंदाज अन्य जनप्रतिनिधियों के लिए भी एक बड़ा सबक है। मुख्यमंत्री का यह अंदाज न केवल अफसरों को सतर्क रखता है, बल्कि आम जनता में यह विश्वास पैदा करता है कि उनके बीच का ही एक व्यक्ति आज प्रदेश की कमान संभाल रहा है।

कार्यकर्ताओं के लिए विशेष 'अपॉइंटमेंट' की दीवार नहीं

भजनलाल शर्मा का यह व्यवहार संदेश देता है कि सत्ता के शिखर पर होने के बावजूद वे खुद को एक 'जनसेवक' ही मानते हैं। राजनीति के जानकारों का कहना है कि वे बिना किसी दिखावे के सरकारी योजनाओं का फीडबैक लेते हैं। सुरक्षा प्रोटोकॉल को कम कर जनता के सीधे संपर्क में रहते हैं। जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं से मिलने के लिए किसी विशेष 'अपॉइंटमेंट' की दीवार नहीं रखते।

ग्राउंड जीरो पर मुख्यमंत्री :

- **बंबोरी गांव (मई 2026):** हाल ही में प्रतापगढ़ के बंबोरी गांव में रात्रि विश्राम के बाद मुख्यमंत्री सुबह की सैर पर निकले।
- **आम नागरिकों से मेल-मिलाप:** सैर के दौरान उन्होंने गांव की गलियों में घूमकर बुजुर्गों का आशीर्वाद लिया और बच्चों को दुलारा।
- जयपुर के पार्कों में उपस्थिति: वे अक्सर जयपुर के सेंट्रल पार्क, जवाहर सर्किल और सिटी पार्क में सामान्य नागरिकों के साथ वॉक करते हैं।

चाय की थड़ी पर 'चाय पे चर्चा'

- **कुल्हड़ वाली चाय:** जयपुर के महाराजा कैफे और सांगानेर के वाटिका में उन्होंने सड़क किनारे गाड़ी रुकवाकर कुल्हड़ में चाय पी।
- **खाट पर संवाद:** बंबोरी में उन्होंने एक ग्रामीण के घर के बाहर खाट पर बैठकर मंत्रियों के साथ चाय की चुस्कियां लीं और ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं।
- **ट्रैफिक का ध्यान:** उन्होंने निर्देश दिए हैं कि उनके काफिले की वजह से आम जनता और मरीजों को परेशानी न हो, इसके लिए वे खुद भी रेड सिग्नल पर रुकते हैं।

ट्रैफिक प्रोटोकॉल में बदलाव और आम आदमी की फिक्र

मुख्यमंत्री बनने के बाद भजनलाल शर्मा ने सबसे पहला बड़ा फैसला वीआईपी मूवमेंट के दौरान लगने वाले ट्रैफिक जाम को लेकर लिया था। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि उनके काफिले के लिए आम जनता को घंटों इंतजार न करना पड़े। कई बार उन्हें लाल बत्ती पर रुकते हुए भी देखा गया है, जो राजस्थान में एक दुर्लभ दृश्य है।

अचानक निरीक्षण और ढाबों पर भोजन

मुख्यमंत्री की सादगी तब भी दिखी जब वे अपनी यात्राओं के दौरान अचानक सड़क किनारे बने ढाबों पर भोजन करने रुक गए। बिना किसी पूर्व सूचना के आम लोगों के साथ बैठकर चाय पीना और उनकी समस्याएं सुनना अब उनकी कार्यशैली का हिस्सा बन चुका है। हाल ही में उनके कुछ वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए हैं जिनमें वे आम ग्रामीणों की तरह संवाद करते नजर आ रहे हैं।

गांव और जमीनी जुड़ाव :

- **रात्रि विश्राम:** वे केवल सरकारी दौरों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि गांवों में रात बिताकर वहां की वास्तविक स्थिति समझते हैं।
- **किसानों की प्राथमिकता:** ग्रामीणों से बातचीत में उन्होंने हमेशा किसानों को समृद्ध बनाने और स्थानीय स्तर पर कृषि प्रसंस्करण इकाइयां लगाने पर जोर दिया है।
- **सीधा निरीक्षण:** वे बच्चों की कॉपियां चेक करने और सरकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा है या नहीं, यह खुद देखने के लिए जाने जाते हैं।

साधारण किसान परिवार से, एक ही दिन में 360 डिग्री का घुमाव :

राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की जीवन यात्रा वास्तव में एक प्रेरक बदलाव का प्रतीक है। एक साधारण किसान परिवार से निकलकर प्रदेश के सर्वोच्च पद तक पहुँचने का उनका सफर किसी फिल्मी पटकथा जैसा है। उनका जन्म भरतपुर के एक छोटे से गाँव अटारी में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत 27 वर्ष की उम्र में अपने गाँव के सरपंच के रूप में की थी। राजनीति के शुरुआती दिनों में वे दूध बेचने का काम भी करते थे ताकि परिवार का गुजारा हो सके। पहली बार विधायक बनने के बाद, जहाँ वे विधायक दल की बैठक में आखिरी पंक्ति में बैठे थे, वहीं से सीधे मुख्यमंत्री की कुर्सी तक पहुँचकर उनकी जिंदगी 360 डिग्री बदल गई।

राजनीतिक यात्रा के महत्वपूर्ण पड़ाव :

30 से अधिक वर्षों तक एबीवीपी, आरएसएस और भाजपा संगठन में एक अनुशासित कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया। 1990 के कश्मीर मार्च और 1992 के राम जन्मभूमि आंदोलन के दौरान वे जेल भी गए। 2003 के चुनाव में अपनी जमानत जब्त होने के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी और संगठन के लिए काम करना जारी रखा। 2023 में जयपुर की सांगानेर सीट से पहली बार विधायक चुने गए और फिर राजस्थान के 14वें मुख्यमंत्री बने।

सम्पादकीय

ममता का हठ

पश्चिम बंगाल में खुद अपना भी चुनाव हारने के साथ ही बुरी पराजय का सामना करने के बाद ममता बनर्जी का यह कहना राजनीतिक हठधर्मी ही है कि वे मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र नहीं देंगी। ऐसा कहकर वे अपनी अलोकतांत्रिक मानसिकता का परिचय देने के साथ ही अपने उस अराजक राजनीतिक व्यवहार को भी रेखांकित कर रही हैं, जिसके चलते उनकी पार्टी को सत्ता से बाहर होना पड़ा।

वे इसकी जानबूझकर अनदेखी कर रही हैं कि उनके साथ-साथ पराजय का सामना करने वाले तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने अपनी हार सहजता से स्वीकार कर ली और केरलम के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने तो ऐसा करने के साथ ही अपने पद से इस्तीफा भी दे दिया। लोकतंत्र में ऐसा ही होना चाहिए, लेकिन ममता बनर्जी एक तरह से बालहठ ही नहीं दिखा रही हैं, बल्कि राजनीतिक अपरिपक्वता का भी परिचय दे रही हैं।

राजनीति का लंबा अनुभव रखने वाली ममता बनर्जी इससे अनभिज्ञ नहीं हो सकतीं कि यदि वे इस्तीफा नहीं देतीं तो राज्यपाल उन्हें बर्खास्त कर सकते हैं या फिर राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करने की सिफारिश कर सकते हैं। यदि उनके हठ के कारण इसकी नौबत आई तो इससे उनकी फजीहत ही होगी। रह-रहकर संविधान की दुहाई देने वाली ममता बनर्जी जिस तरह इस्तीफा देने से मना कर रही हैं, उसकी मिसाल मिलना कठिन है।

इस्तीफा न देने की जिद करके ममता बनर्जी अपने समर्थकों को यह संदेश देने की नाकाम कोशिश कर रही हैं कि उनके साथ अन्याय हुआ है, लेकिन इस तरह से वे न तो लोगों की सहानुभूति अर्जित कर सकती हैं और न ही अपने खोए हुए जनाधार को वापस पा सकती हैं। उन्हें यह पता होना चाहिए कि लोग सब कुछ तो भूल जाते हैं, लेकिन किसी का अहंकार आसानी से नहीं भूलते।

यदि ममता बनर्जी अपनी खोए हुए जनाधार को फिर से पाना चाहती हैं तो उन्हें जनादेश को विनम्रता से स्वीकार करना चाहिए। उनका तर्क है कि वे हारी नहीं, बल्कि उन्हें हराया गया है। साफ है कि वे यह समझने-मानने को तैयार नहीं कि उनकी पराजय का कारण उनका कुशासन और उसके चलते जनता की उनसे गहरी नाराजगी रही। यह बताने की जरूरत नहीं कि तृणमूल कांग्रेस कोई 10-15 सीटों के अंतर से बहुमत से दूर नहीं रही। वह 294 सीटों वाली विधानसभा में सौ सीटों तक भी नहीं पहुंच सकी। ममता बनर्जी खुद को हराए जाने का आरोप उछाल कर वही लाइन ले रही हैं, जो राहुल गांधी ने एक लंबे समय से पकड़ रखी है और जिसके तहत चुनाव की चोरी का राग अलापते रहते हैं। गत दिवस उन्होंने यही राग अलापते हुए कहा कि असम और बंगाल में भाजपा ने चुनाव आयोग के समर्थन से चुनाव की चोरी की। प्रश्न यह है कि आखिर केरलम के बारे में उनकी क्या राय है, जहां कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन ने जीत हासिल की है?

अंतरिक्ष में चीनी-अमेरिकी संघर्ष के बीच भारत

अमेरिका और चीन के बीच अंतरिक्ष को लेकर होड़ में दोनों की महत्वाकांक्षाएं हैं। वहीं भारत की भी मानव अंतरिक्ष उड़ानें लॉन्च करने व चंद्रयान मिशन जैसी योजनाएं हैं। आर्टेमिस-टू की सफलता इसमें मददगार होगी। लेकिन यदि दोनों महाशक्तियों के बीच अंतरिक्ष में युद्ध छिड़ा, तो भारत के लिए चिंताजनक स्थिति होगी।

बीते बुधवार को कांग्रेस की एक सुनवाई में अमेरिकी सांसदों को बताया गया, कि चीन, अमेरिका के लिए 'अंतरिक्ष में सबसे बड़ा खतरा और प्रतिस्पर्धी' है, जो अपनी खगोलीय क्षमताओं का इस्तेमाल 'कूटनीति और सामरिक प्रभाव के एक हथियार के तौर पर' कर रहा है; यह बात ऐसे समय में सामने आई है जब चांद पर पहुंचने की इन दोनों देशों की होड़, और तेज़ हो गई है।

अमेरिका और चीन के बीच अंतरिक्ष को लेकर चल रही होड़ में दोनों देशों का लक्ष्य आने वाले सालों में चांद पर अपने अंतरिक्ष यात्रियों को भेजना है। जहां चीन ने अपनी पहली मानवयुक्त चंद्र लैंडिंग के लिए 2030 का लक्ष्य रखा है, वहीं अमेरिका के आर्टेमिस कार्यक्रम का लक्ष्य 2028 तक अंतरिक्ष यात्रियों को चांद की सतह पर वापस लाना, और 2030 तक वहां एक अंतरिक्ष सैन्य अड्डा बनाना शुरू करना है; इससे इन दोनों महाशक्तियों के बीच कड़ी टक्कर शुरू हो गई है।

'सेंटर फॉर स्ट्रेटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज़' में एयरोस्पेस सिक्योरिटी प्रोजेक्ट की निदेशक कैरी बिंगेन के हाउस फॉरेन अफेयर्स सब-कमेटी ऑन यूरोप की एक सुनवाई में दी जानकारी के मुताबिक, 'जैसे-जैसे देश मानकों के मामले में अमेरिका या चीन में से किसी एक के साथ जुड़ेंगे, तो जीतने वाला देश न सिर्फ़ तकनीक देगा, बल्कि वह उन शर्तों को भी तय करेगा, जिनके आधार पर सूचनाओं का आदान-प्रदान होगा। नेटवर्क आपस में काम करेंगे, लेकिन दुनिया को किस नज़र से देखा जाएगा?'

सुनवाई के दौरान फ्लोरिडा के रिपब्लिकन कांग्रेसी रैंडी फाइन के अनुसार, 'जब अंतरिक्ष की बात आती है, तो वह 'चीन को लेकर बहुत चिंतित हैं, जैसा कि मुझे पता है कि और भी कई लोग हैं। मुझे लगता है कि चीन खुद को हमारे साथ युद्ध की स्थिति में देखता है। यह भी कि हम अक्सर इसे उसी नज़र से नहीं देखते।' दरअसल पिछले एक साल में अंतरिक्ष दौड़ में कई अहम घटनाक्रम देखने को मिले हैं; अमेरिका ने अपने आर्टेमिस कार्यक्रम का दूसरा सफल मिशन पूरा किया, वहीं चीन ने अपने 2030 के मून मिशन की तैयारी में कई अहम प्रगति की। अमेरिका ही एकमात्र ऐसा देश है, जिसने इंसानों को सफलतापूर्वक चांद पर पहुंचाया है। दूसरी तरफ़ चीन, भारत और पूर्व सोवियत संघ सहित अन्य देशों ने चांद की सतह पर रोबोटिक मिशन उतारने में कामयाबी हासिल की।

गत बुधवार को हुई इस सुनवाई का शीर्षक था, 'ऑर्बिट्स ऑफ़ इन्फ्लुएंस : यूएस स्पेस सिक्योरिटी'। यह सुनवाई उसी दिन हुई, जिस दिन ट्रंप ने व्हाइट हाउस में आर्टेमिस-टू के अंतरिक्ष यात्रियों की मेज़बानी की थी। इस कार्यक्रम में नासा मिशन में तीन अमेरिकी और एक कनाडाई अंतरिक्ष यात्री शामिल थे। सुनवाई के दौरान, एयरोस्पेस सिक्योरिटी प्रोजेक्ट की निदेशक कैरी बिंगेन का चीन पर आरोप था कि वह ग्लोबल साउथ में अपनी साझेदारियों का विस्तार करके अंतरिक्ष का इस्तेमाल अन्य देशों पर अपना प्रभाव जमाने के लिए कर रहा है।

जॉर्ज वॉशिंगटन यूनिवर्सिटी के स्पेस पॉलिसी इंस्टिट्यूट के डायरेक्टर स्कॉट पेस के मुताबिक, चीन अपनी महत्वाकांक्षाओं को मशहूर 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' के ज़रिए आगे बढ़ा रहा है, जिसमें पार्टनर देशों को जोड़ने वाला एक बढ़ता हुआ स्पेस कंपोनेंट भी शामिल है। कैरी बिंगेन के खुलासे के मुताबिक, चीन ने 'ग्लोबल साउथ' कहे जाने वाले लैटिन अमेरिका और अफ्रीका के कई देशों के साथ समझौते किए हैं। बिंगेन के मुताबिक, 'वे स्पेस ग्राउंड एंटीना, ग्राउंड स्टेशन कमांड और कंट्रोल साइट लगा रहे हैं। यह बुनियादी टेक्नोलॉजी है जो उन ग्राउंड स्टेशनों और एंटीना को सरकारी सिस्टम या किसी कमर्शियल सिस्टम के साथ बातचीत करने में मदद करता है।' अमेरिकी एयरोस्पेस सिक्योरिटी प्रोजेक्ट की निदेशक कैरी बिंगेन के मुताबिक, 'चीन, जहां एक तरफ अपना कमर्शियल स्पेस सेक्टर बना रहा है, वहीं उसका यह प्रोग्राम काफी हद तक पीपुल्स लिबरेशन आर्मी और सरकार द्वारा ही चलाया जा रहा है। इस सुनवाई में शीत युद्ध के दौरान अमेरिका और रूस के बीच हुई स्पेस रेस का भी ज़िक्र हुआ, जब रूस, 'सोवियत संघ' के नाम से जाना जाता था।'

20वीं सदी का ज़्यादातर हिस्सा मुकाबले में गुज़र गया, लेकिन हाल के सालों में हालात बदल गए हैं। इस बारे में बिंगेन के विचार हैं कि जहां रूस अभी भी एक खतरा बना हुआ है, वहीं चीन एक अहम खिलाड़ी के तौर पर उभरा है, जो किसी भी आधुनिक स्पेस

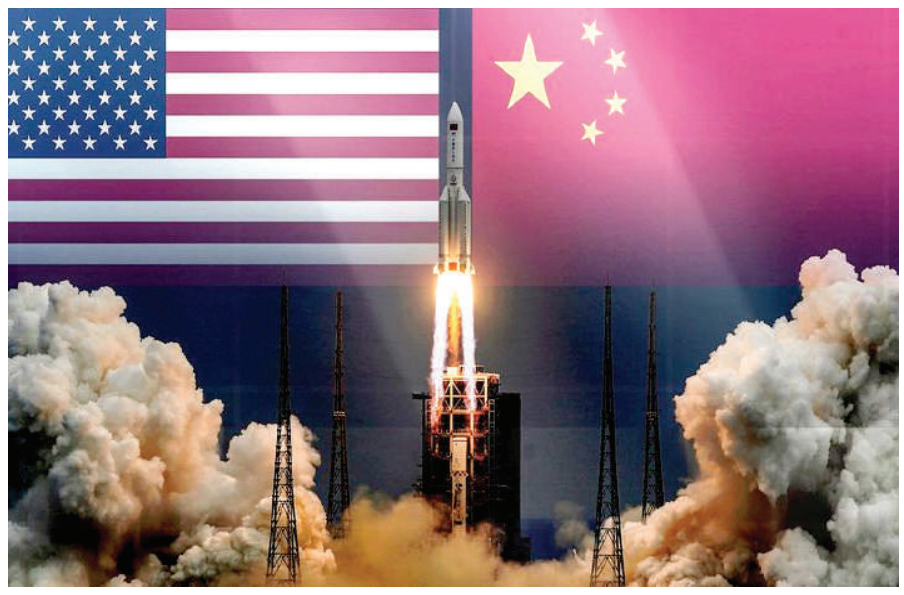

प्रोग्राम के इतिहास में सबसे तेज़ तरक्की में से एक है। कैरी बिंगेन के अनुसार, 'स्पेस में नई ऊंचाइयां छूने की दौड़ जारी हैङ्कअमेरिका, चीन और रूस, मिलिट्री और सुरक्षा के क्षेत्रों में स्पेस में एक-दूसरे से लगातार मुकाबला कर रहे हैं।'

ठीक से देखा जाये, तो यह पूरी दुनिया के लिए चेतावनी है। यहां रक्षा और अंतरिक्ष मामलों के विशेषज्ञ कौशिक रे की यह बात महत्वपूर्ण है कि, 'हालांकि, भारत आर्टेमिस-टू में सीधे तौर पर शामिल नहीं है, लेकिन वह 'आर्टेमिस अकार्ड' का हस्ताक्षरकर्ता है, और इस तरह वह अमेरिका के नेतृत्व वाले चांद की खोज के बड़े इकोसिस्टम का हिस्सा बन जाता है। नतीजतन, आर्टेमिस-टू की सफलता उस ढांचे को मज़बूत करती है, जिसमें भारत अब एक हिस्सेदार है।'

गौरतलब है कि भारत ने पूरी शिद्दत से रूस, अमेरिका और चीन के बाद, मानव अंतरिक्ष उड़ानें लॉन्च करने वाला चौथा देश बनने का लक्ष्य रखा है। इस संदर्भ में चंद्रयान चंद्र अन्वेषण मिशनों का भी रे ने जिक्र किया। उनके मुताबिक, 'इसरो को आर्टेमिस-टू मिशन द्वारा जुटाए गए अनुभव और डेटा से फ़ायदा होगा, जो भारत के चंद्रयान और गगनयान कार्यक्रमों के साथ-साथ लंबी अवधि की मानव अंतरिक्ष उड़ानों में इसरो की भविष्य की महत्वाकांक्षाओं के लिए भी बहुत प्रासंगिक है।'

चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) कक्षा में उपग्रहों को नष्ट करने के लिए डिज़ाइन की गई जमीनी मिसाइलों का विकास जारी रखे हुए है। पीएलए ने रोबोटिक भुजाओं, कैमरों और सेंसरों से लैस उपग्रह तैनात किए हैं, जो शत्रु उपग्रहों से निपटने या उनमें हस्तक्षेप करने में सक्षम हैं। चीन, इमेजिंग उपग्रहों को नुकसान पहुंचाने, जैमर के ज़रिये उनकी क्षमता कम करने, या उन्हें 'अंधा' करने के लिए डिज़ाइन की गई, जमीनी लेजर प्रणालियां विकसित कर रहा है। पेंटागन की रिपोर्ट की मानें, तो पीएलए, उपग्रह नियंत्रण प्रणालियों को हैक करने, सैन्य लामबंदी और रसद व्यवस्था को बाधित करने पर फोकस्ड है।

आर्टेमिस-टू का सहयोगी बनने से हमारी महत्वाकांक्षाओं को मज़बूती मिलती है, यहां तक तो बात ठीक है। लेकिन जो भविष्य की तैयारियां हम देख रहे हैं, यदि चीन और अमेरिका के बीच अंतरिक्ष में युद्ध छिड़ा, फिर भारत के लिए विकट स्थिति होगी। दोनों पक्षों में देर-सवेर अंतरिक्ष में घमासान होना तय मानिये। ऐसे में भारत किसकी तरफ़ होगा? यह विचारणीय विषय है!

बंगाल विजय: संघ की जमीनी साधना शांति से शक्ति तक

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की ऐतिहासिक, अद्भुत, अविस्मरणीय एवं करिश्माई जीत के पीछे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (संघ) की बहुत बड़ी भूमिका रही है। निश्चिततौर पर इस शानदार जीत के लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं गृहमंत्री अमित शाह मुख्य भूमिका में हैं। लेकिन बंगाल में ममता बनर्जी की मजबूत चुनौती के सामने भाजपा की जीत के लिए संघ लंबे समय से मेहनत कर रही थी और उसकी वह मेहनत ही जीत का सशक्त माध्यम बनी है। पश्चिम बंगाल में लगातार चल रही हिन्दू विरोधी गतिविधियों एवं मुसलमानों के बढ़ते वर्चस्व को देखते हुए संघ ने इस चुनाव के मद्देनजर बहुत पहले से ही कमर कस ली थी, संघ ने पश्चिम बंगाल में 1.75 लाख से अधिक छोटी-बड़ी बैठकें आयोजित कीं। पिछले 15 सालों में संघ ने पश्चिम बंगाल में तेजी से विस्तार किया है और एक मजबूत 'हिंदू वोट बैंक' तैयार किया है। पश्चिम बंगाल में पिछले 15 वर्षों में संघ की शाखाओं की संख्या 900 से बढ़कर 5,000 तक पहुंच गई है। संघ के स्वयंसेवकों ने पश्चिम बंगाल में घर-घर जाकर 'बंग बचाओ' इस थीम पर 'मतदाता जागरूकता अभियान' चलाया। संघ की माइक्रो प्लानिंग ने बंगाल में भाजपा को ऐतिहासिक बढ़त दिलाई और सत्ता परिवर्तन का माध्यम बनी। पश्चिम बंगाल चुनाव भाजपा के लिए एक ऐतिहासिक 'मील का पत्थर' और ऐतिहासिक सफलता साबित हुआ। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के नतीजों ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि राजनीति केवल बड़े मंचों, विशाल रैलियों और जोरदार नारों से तय नहीं होती। कई बार असली लड़ाई उन स्तरों पर लड़ी जाती है, जहां न कैमरे पहुंचते हैं और न ही जमीनी प्रयास सुर्खियां बनती हैं। इस बार के चुनाव में एक ऐसी ही खामोश रणनीति कारगर साबित हुई है। जहां एक ओर ममता बनर्जी और उनकी पार्टी तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) का आक्रामक चुनाव प्रचार केंद्र में रहा, वहीं दूसरी ओर संघ से जुड़े कार्यकर्ताओं ने अपेक्षाकृत शांत रहकर 'निःशब्द विप्लव' या 'मूक क्रांति' को अंजाम देते हुए जमीनी स्तर पर अपनी पकड़ मजबूत करने पर ध्यान दिया। बंगाल की अस्मिता, विकास और सांस्कृतिक पहचान जैसे मुद्दों को आधार बनाकर जनजागरण अभियान चलाया गया। इस दौरान महिला, युवा, प्रबुद्ध वर्ग, किसान, श्रमिक और अनुसूचित जाति-जनजाति समुदायों तक अलग-अलग तरीकों से पहुंचने की कोशिश की गई।

निश्चिततौर पर पश्चिम बंगाल की राजनीति ने वर्ष 2026 में जो ऐतिहासिक करवट ली, वह केवल सत्ता परिवर्तन की घटना नहीं है, बल्कि एक गहरे सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिवर्तन का संकेत भी है। लंबे समय तक वामपंथी प्रभाव और उसके बाद ममता बनर्जी के नेतृत्व में ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस का वर्चस्व रहा, लेकिन इस बार जनमत ने जिस प्रकार से भाजपा के पक्ष में निर्णायक रूप से झुकाव दिखाया, उसने स्थापित राजनीतिक धारणाओं को चुनौती दी है। इस परिवर्तन के मूल में जो शक्ति को सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानी रही है तो वह है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जिसने एक अदृश्य लेकिन अत्यंत प्रभावशाली भूमिका निभाई है। यह विजय केवल चुनावी रणनीतियों का परिणाम नहीं, बल्कि वर्षों से चल रहे संगठनात्मक परिश्रम, वैचारिक विस्तार और समाज के भीतर गहराई तक किए गए संवाद का परिणाम है। पश्चिम बंगाल में संघ का विस्तार किसी तात्कालिक राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित नहीं था, बल्कि यह एक दीर्घकालिक सामाजिक दृष्टि का हिस्सा था। पिछले डेढ़ दशक में संघ ने प्रांत में जिस प्रकार अपनी शाखाओं का विस्तार किया और समाज के विभिन्न वर्गों तक अपनी पहुंच बनाई, उसने एक मजबूत वैचारिक आधार तैयार किया। यह कार्य किसी प्रचार की तरह नहीं, बल्कि एक शांत सामाजिक प्रक्रिया एवं क्रांति की तरह हुआ, जिसने धीरे-धीरे जनमानस को प्रभावित किया। यही कारण है कि जब चुनाव का समय आया, तो एक पहले से तैयार मानसिकता भाजपा के पक्ष में खड़ी दिखाई दी। इस पूरे परिदृश्य में सरसंघचालक मोहन भागवत की रणनीतिक दृष्टि को भी विशेष रूप से रेखांकित किया जाना चाहिए। उन्होंने बंगाल को केवल एक राजनीतिक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक भूमि के रूप में देखा, भारत की अस्मिता के रूप में देखा। जिसकी अपनी विशिष्ट पहचान और परंपराएं हैं। संघ के प्रयासों में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि उसने बंगाल की सांस्कृतिक चेतना को समझने और उससे जुड़ने का प्रयास किया।

दुर्गा पूजा, काली पूजा और रामनवमी जैसे पर्वों को सामाजिक एकता और सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे एक व्यापक सामाजिक जुड़ाव स्थापित हुआ। इस प्रक्रिया में हिंदुत्व को किसी बाहरी विचारधारा के रूप में नहीं, बल्कि बंगाल की सांस्कृतिक आत्मा के एक स्वाभाविक विस्तार के रूप में प्रस्तुत किया गया। लंबे समय तक यह धारणा बनी रही कि बंगाली अस्मिता और हिंदुत्व परस्पर विरोधी हैं, लेकिन इस चुनाव में यह धारणा काफी हद तक टूटती हुई दिखाई दी। जय श्री राम के साथ जय मां काली और जय मां दुर्गा जैसे नारों का समन्वय केवल राजनीतिक नारा नहीं था, बल्कि एक सांस्कृतिक संदेश था, जिसने यह स्थापित किया कि क्षेत्रीय पहचान और व्यापक सांस्कृतिक विचारधारा के बीच कोई टकराव नहीं है। इस समन्वय ने मतदाताओं के भीतर एक नई प्रकार की आत्मजागरूकता उत्पन्न की, जहां वे केवल विकास या योजनाओं के आधार पर नहीं, बल्कि अपनी पहचान, सुरक्षा और सांस्कृतिक गौरव के आधार पर भी निर्णय लेने लगे। चुनाव के दौरान जिस प्रकार से 'अस्तित्व' एवं 'अस्मिता' का विमर्श उभरा, उसने इस पूरे राजनीतिक परिदृश्य को एक नई दिशा दी। संघ और भाजपा ने इसे केवल एक चुनावी मुकाबले के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि एक वैचारिक संघर्ष के रूप में स्थापित किया, जिसमें पहचान और सम्मान के प्रश्न प्रमुख हो गए। ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस पर लगाए गए तुष्टिकरण के आरोपों ने इस विमर्श को और तीव्र किया, जिससे मतदाताओं के बीच एक स्पष्ट ध्रुवीकरण देखने को मिला।

विशेष आलेख /राशिफल

केरल से सत्ता तो केरलम् से ही हाशिये में जाती कम्युनिस्ट पार्टियां

पांच राज्यों के 4 मई के चुनाव परिणाम देश में बड़े बदलाव का संकेत लेकर आये हैं। एक और जहां पश्चिम बंगाल में पिछले 15 साल का ममता बनर्जी सरकार की करारी हार हुई है तो केरलम् में एलडीएफ की करारी हार के साथ ही देश में एक मात्र वामपंथी सरकार का भी अंत हो गया है। असम में हिमंता सरकार की हेटट्रिक, पुडुचेरी में एनडीए की वापसी और तमिलनाडू में डीएमके-एआईडीएमके की 57 साल की राजनीति का अंत और अभिनेता से नेता बने विजयन का उदय बहुत कुछ कहता है। जनता ने अपना मेंडेट दे दिया है तो चुनाव आयोग ने भी अपना कार्य बखूबी निभा दिया है भले ही अब हारने वाले लाख आरोप-प्रत्यारोप लगायें पर इन चुनावों की एक खास विशेषता यह रही कि मतदान प्रतिशत में उल्लेखनीय बढ़ोतरी और हिंसा भी लगभग नहीं के बराबर रही है। प.बंगाल में भारतीय जनता पार्टी की जीत के साथ भाजपा का वर्षों पुराना सपना पूरा हो गया है वहीं सबसे अधिक चिंतनीय व गंभीर परिणाम यह रहा है कि केरलम् में वामपंथी सरकार की हार के साथ ही देश में वामपंथ हाशिये में चला गया है। मजे की बात यह है कि 1956 में त्रावणकोर, कोचिन और मालाबार को मिलाकर बने केरलम् की 1957 की पहली चुनी हुई सरकार कम्युनिस्ट पार्टी ईएमएस नंबूदरीपाद की बनी। ठीक 70 साल बाद केरलम् में वामपंथियों की हार के साथ ही देश में वामपंथियों की एकमात्र राज्य की अंतिम सरकार का भी अंत हो गया है। सवाल यह उठने लगा है कि प. बंगाल और त्रिपुरा की तरह केरलम् में भी क्या अब वामपंथी सरकार आने वाले सालों में वापसी नहीं कर पायेगी ? इतिहास तो यही बता रहा है कि 34 साल के लगातार शासन के बावजूद 2011 के बाद से प. बंगाल में कम्यूनिस्ट

सरकार की वापसी नहीं हो पायी है तो 25 साल से सरकार के बावजूद त्रिपुरा में भी 2018 के बाद से कम्युनिस्ट सरकार की वापसी नहीं हो पायी है। इससे लगता है कि वामपंथ या कम्युनिस्ट सरकारें अब इतिहास का हिस्सा बनती जा रही है। मजे की बात यह है कि लोकसभा में भी आज कम्युनिस्टों का प्रतिनिधित्व सिमट कर 4 की संख्या तक रह गया हैं हांलाकि यह गत लोकसभा से एक ज्यादा है। यह नहीं भूलना चाहिए कि 1977 के बाद जिस तरह से भारतीय राजनीति में कम्युनिस्ट पार्टियों का दबदबा बढ़ा वह 1990 के दशक में किंग मेकर की स्थिति में आ गया था यहां तक कि 2004 में लोकसभा में 59 सदस्यों के साथ कम्युनिस्ट पार्टियों की सर्वाधिक भागीदारी रही और ज्योतिबसु को एक बार नहीं अपितु तीन बार देश का प्रधानमंत्री का पद ऑफर किया गया पर वामपंथियों में अहम् की लड़ाई के चलते यह अवसर खो दिया और इसके बाद तो कम्यूनिस्ट पार्टियां धीरे धीरे हाशिये में जाती रही जबकि सोमनाथ चटर्जी लोकसभा अध्यक्ष रहे तो उस दौर में कम्यूनिस्ट पार्टियां किंग मेकर की भूमिका निभा रही थी। एक दौर था जब कम्युनिस्ट पार्टियों के बड़े बड़े नाम होते थे। समय ने पलटा खाया और धीरे धीरे पार्टियां पहचान खोने लगी।

हमारे देश में कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास आजादी से पहले का है। 26 दिसंबर, 1925 को मानवेन्द्र नाथ रॉय जिन्हें एमएन रॉय के नाम से भी अधिक जाना जाता रहा है ने कानपुर में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की। उस समय अवनी मुखर्जी, एसबी घाटे, मोहम्मद अली और मोहम्मद शफीक सिद्धिकी उनके संस्थापक साथी रहे। कम्युनिस्टों की भारतीय राजनीति में उभार को इसी से समझा जा सकता है कि आजादी के बाद 1957 में केरल की पहली चुनी हुई सरकार वामपंथियों की बनी। यह दूसरी बात है कि बाद में कांग्रेस द्वारा इस सरकार को बर्खास्त कर दिया गया। पर आजादी के बाद से अब तक केरल में अधिकांश शासन कम्युनिस्ट पार्टियों का ही रहा है। प. बंगाल में भी 1977 से 2011 तक लगातार कम्यूनिस्ट सरकार रही। त्रिपुरा में भी कम्युनिस्टों का बीच बीच में अंतराल के बावजूद काफी समय तक रहा है। माणिक सरकार के बाद से बीजेपी एनडीए गठबंधन ने त्रिपुरा में सत्ता संभाल ली है। 1964 में चीन को लेकर कम्युनिस्ट पार्टी में विभाजन हुआ और भाकपा और माकपा दो पार्टियां बन गई। धीरे धीरे बर्चस्व और अहम् की लड़ाई ने कम्युनिस्ट आंदोलन को धक्का पहुंचाने के बाद ही भारतीय राजनीति में भी कम्यूनिस्ट पार्टियों का प्रभाव कम होता गया।

वैसे उदारीकरण के दौर में कम्युनिस्ट पार्टियों के सामने नए तरह की चुनौतियां सामने आई और 1922 में रुस में बना यूएसएसआर तक 70 साल बाद ही 1991 आते आते बिखराव के दौर में आ गया। यूक्रेन सहित कई राज्य अलग हो गए और आज रुस और यूक्रेन का संघर्ष जगजाहिर है।

क्या कहते है आपके सितारें....?

मेष — आय में निश्चितता रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। प्रमाद न करें। लाभ बढ़ेगा। यात्रा में सावधानी रखें। जल्दबाजी से हानि होगी। अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। चिंता तथा तनाव रहेंगे। वाणी पर नियंत्रण रखें। दूसरों के कार्य में दखल न दें।

सिंह — अपेक्षित कार्यों में विलंब होगा। जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा। कारोबार में वृद्धि होगी। नौकरी में अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। रुके हुए कार्यों में गति आएगी। घर-बाहर सभी अपेक्षित कार्य पूर्ण होंगे। दूसरों के कार्य की जवाबदारी न लें।

धनु — आय में निश्चितता रहेगी। मातहतों से अनबन हो सकती है। पारिवारिक समस्याओं में इजाफा होगा। चिंता तथा तनाव बने रहेंगे। भागदौड़ रहेगी। दूर से बुरी खबर मिल सकती है। विवाद को बढ़ावा न दें। बनते कामों में बाधा हो सकती है।

वृषभ — कोर्ट व कचहरी के काम बनेंगे। अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी। बेचैनी रहेगी। चोट व रोग से बचें। विवेक से कार्य करें। लाभ में वृद्धि होगी। मान-सम्मान मिलेगा। प्रसन्नता रहेगी। कारोबार में वृद्धि होगी। नौकरी में अधिकार बढ़ सकते हैं।

कन्या — दूसरों से अपेक्षा न करें। कुसंगति से हानि होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। नौकरी में अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। किसी बड़े काम करने की योजना बनेगी। व्यवसाय लाभप्रद रहेगा।

मकर — व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। किसी के व्यवहार से स्वाभिमान को चोट पहुंच सकती है। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। नौकरी में अनुकूलता रहेगी। व्यापार में वृद्धि होगी। कोई बड़ी बाधा आ सकती है। राजभय रहेगा। जल्दबाजी से काम बिगड़ेंगे।

मिथुन — वाणी पर नियंत्रण रखें। अपेक्षित कार्यों में विलंब हो सकता है। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। नौकरी में उच्चाधिकारी की प्रसन्नता प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। शारीरिक कष्ट से बाधा संभव है।

तुला — भाइयों का सहयोग मिलेगा। पुराने किए गए प्रयासों का लाभ मिलना प्रारंभ होगा। मित्रों की सहायता कर पाएंगे। नौकरी में चैन रहेगा। निवेश शुभ रहेगा। किसी वरिष्ठ व्यक्ति का सहयोग प्राप्त होगा। पूजा-पाठ में मन लगेगा।

कुंभ — मनपसंद भोजन का आनंद प्राप्त होगा। लेन-देन में सावधानी रखें। शत्रुओं का पराभव होगा। विवाद को बढ़ावा न दें। भय रहेगा। प्रमाद न करें। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। विद्यार्थी वर्ग सफलता हासिल करेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा।

कर्क — छोटे भाइयों का सहयोग प्राप्त होगा। संचित कोष में वृद्धि होगी। प्रतिद्वंद्विता में वृद्धि होगी। जीवनसाथी से अनबन हो सकती है। स्थायी संपत्ति खरीदने-बेचने की योजना बन सकती है। परीक्षा व साक्षात्कार आदि में सफलता प्राप्त होगी।

वृश्चिक — प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। निवेश शुभ रहेगा। पार्टनरों का सहयोग प्राप्त होगा। लेन-देन में जल्दबाजी न करें। व्यापार में अधिक लाभ होगा। यात्रा मनोरंजक रहेगी। किसी आनंदोत्सव में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा।

मीन — चिंता तथा तनाव रहेंगे। पार्टनरों से मतभेद संभव है। व्यवसाय ठीक चलेगा। समय नेष्ट है। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें। जरा सी लापरवाही से अधिक हानि हो सकती है। पुराना रोग बाधा का कारण बन सकता है।

गांवों के विकास के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने की रात्रि चौपाल

बदलते दौर में किसान अपनाएं लाभकारी खेती, तकनीक के उपयोग से बनें मजबूत

मुख्यमंत्री ने प्रतापगढ़ के बम्बोरी गांव में किया रात्रि विश्राम, देर रात तक ग्रामीणों से किया संवाद

- युवा ही माता-पिता और राष्ट्र की सबसे बड़ी आशा,पेपरलीक पर प्रभावी अंकुश से लौटा युवाओं का विश्वास
- लखपति दीदी समाज और सरकार के बीच बनें मजबूत कड़ी,अधिकाधिक महिलाओं को आर्थिक आत्मनिर्भरता से जोड़े :मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा
- किसानों ने कृषि,पशुपालन से संबंधित दिए सुझाव,कहा डबल इंजन सरकार में मालामाल हो रहा किसान

युवाओं ने पेपरलीक पर अंकुश एवं परीक्षाओं में पारदर्शिता के लिए मुख्यमंत्री का जताया आभार

प्रतापगढ़/जयपुर

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को प्रतापगढ़ जिले के बम्बोरी गांव में रात्रि प्रवास किया।उन्होंने देर रात तक ग्राम विकास चौपाल में महिलाओं,किसानों, युवाओं एवं वरिष्ठ नागरिकों से आत्मीय संवाद किया।चौपाल में मुख्यमंत्री ने खाट पर बैठकर खेती,सिंचाई,पेयजल, सड़क,बिजली,रोजगार,शिक्षा,जनजाति विकास तथा अन्य स्थानीय विषयों पर विस्तार से चर्चा की।

चौपाल में ग्रामीण महिलाओं ने लखपति दीदी,कृषि सखी,पशु एवं बैंक सखी जैसी योजनाओं से हुए सकारात्मक बदलावों की जानकारी दी।वहीं किसानों एवं पशुपालकों ने आधुनिक कृषि तकनीक,ड्रिप सिंचाई,प्राकृतिक खेती, पशुपालन एवं डेयरी विकास से जुड़े सुझाव दिए और युवाओं ने राज्य सरकार द्वारा रोजगार एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की पारदर्शिता को लेकर अपने अनुभव साझा किए। इस दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का मानना है कि मातृ शक्ति के आत्मनिर्भर और सशक्त बनने से ही देश समृद्ध होगा।लखपति दीदी योजना के माध्यम से देश में मातृ शक्ति की आर्थिक आत्मनिर्भरता का नया अध्याय लिखा जा रहा है।हमारी सरकार ने प्रदेश में लखपति दीदी योजना के तहत 21 लाख से अधिक महिलाओं को प्रशिक्षण दिया है तथा 16 लाख से अधिक महिलाओं को लखपति दीदी की श्रेणी में लाया है। उन्होंने कहा कि लखपति दीदी समाज और सरकार के बीच मजबूत कड़ी बनकर अधिक से अधिक महिलाओं को आत्मनिर्भरता से जोड़ने का कार्य करें।

पहले मैंने सिलाई मशीन से काम शुरू किया, फिर गाय खरीदी।आज मेरी वार्षिक आय 1.40 लाख रुपये है।अब मैं अन्य महिलाओं को भी आत्मनिर्भर बनने और योजनाओं से जुड़ने के लिए प्रेरित करती हूं। लखपति दीदी कांता सेन ने कहा पहले मैं केवल खेतों में काम करती थी,ट्रेनिंग और आर्थिक सहायता मिलने के बाद सिलाई का काम शुरू किया,फिर बैंक सखी की ट्रेनिंग ली।आज मेरी गांव में अलग पहचान है।पहले कोई नहीं जानता था,अब हर कोई सम्मान से नमस्ते करता है। ईना रावत ने कहा स्कूली छात्रा लवीशा ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बम्बोरी में विज्ञान संकाय खोलने का आग्रह किया।छात्रा की बात सुन मुख्यमंत्री ने विद्यालय में विज्ञान संकाय खोलने का आश्वासन दिया।

मुख्यमंत्री से संवाद करते हुए किसानों ने कहा कि डबल इंजन की सरकार में मालामाल हो रहा है।किसान मांगीलाल ने बताया कि वे पिछले 20 वर्षों से जैविक खेती कर रहे हैं तथा खेती में लगातार नवाचार कर रहे हैं।उन्हें जिला स्तर पर पुरस्कार भी मिल चुका है। किसान सुरेश ने बताया कि कृषि क्षेत्र में मिलने वाली सब्सिडी एवं सम्मान निधि से किसानों को काफी लाभ मिल रहा है।
किसान सीताराम धाकड़ ने कहा कि खेती में लागत निकल रही है तथा सरकारी योजनाओं से अच्छा फायदा मिल रहा है।बालूराम ने मंगला पशु बीमा योजना को पशुपालकों के लिए राहतकारी बताया।वहीं किशन ने बताया कि उनके घर में 8-10 गायें हैं तथा कृत्रिम गर्भाधान तकनीक से उन्हें बेहतर परिणाम मिल रहे हैं।मुख्यमंत्री ने पशुपालक के आग्रह पर सरस डेयरी बूथ खोले जाने एवं बम्बोरी तालाब के सौंदर्यीकरण के लिए कार्यवाही के निर्देश दिए।युवा उत्सव जैन ने कहा कि राज्य सरकार युवाओं को पारदर्शिता के साथ रोजगार प्रदान करने के लिए बेहतर कार्य कर रही है।इस दौरान नवनियुक्त युवाओं ने मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार महिलाओं एवं बालिकाओं के सर्वांगीण विकास,स्वास्थ्य सुरक्षा, शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए निरंतर कार्य कर रही है।हमने प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना में देय राशि को 5 हजार रुपये से बढ़ाकर 6 हजार 500 रुपये किया है तथा मा वाउचर योजना के तहत निःशुल्क सोनोग्राफी की सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है। मुख्यमंत्री ने ग्रामीणों से संवाद करते हुए कहा कि हमारी सरकार किसान,गरीब, मजदूर और पशुपालक के जीवन के संघर्ष और उनके सपनों को भलीभांति समझती है।उन्होंने कहा कि गरीबी का दर्द वही समझ सकता है जिसने उसे करीब से देखा हो।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हमारी सरकार किसानों, युवाओं और पशुपालकों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि बदलते दौर में किसानों को लाभकारी खेती की ओर बढ़ना आवश्यक है।इसके लिए हमारी सरकार 23 से 25 मई तक जयपुर में ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट-ग्राम 2026 का आयोजन कर रही है।उन्होंने कहा कि ग्राम 2026 में प्रदेश के हजारों किसान और पशुपालक के साथ ही देश-विदेश के कृषि वैज्ञानिक,तकनीकी विशेषज्ञ,एग्रीटेक डेवलपर,स्टार्टअप्स और कृषि प्रसंस्करण से जुड़े उद्योगपति भाग लेंगे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के लिए बड़े स्तर पर कार्य कर रही है। विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से लाखों हेक्टेयर भूमि को सिंचित करने का लक्ष्य रखा गया है।उन्होंने किसानों को प्राकृतिक एवं ऑर्गेनिक खेती अपनाने,फलदार पौधे लगाने और आधुनिक तकनीकों का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया।उन्होंने किसानों से सोलर ऊर्जा से जुड़ने और फव्वारा प्रणाली जैसी जल संरक्षण तकनीकों को अपनाने का आह्वान किया।

27 अप्रैल से ग्राम विकास रथ अभियान शुरू

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि हमने पूरे प्रदेश में 27 अप्रैल से ग्राम विकास रथ अभियान शुरू किया है। इसके माध्यम से हर पंचायत तक सरकार की योजनाओं की जानकारी दी जा रही है।उन्होंने कहा कि इस अभियान में सरकार सुझाव पेटिका के जरिए आमजन से सुझाव ले रही है।उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री विकसित ग्राम-वार्ड अभियान के अन्तर्गत पहली बार गांव, वार्ड के लिए वर्ष 2030, 2035 और 2047 तक के लिए अल्पकालीन, मध्यमकालीन और दीर्घकालीन विकास का रोडमैप बना रहे है।इसके तहत भविष्य की आवश्यकता के अनुरूप पानी,सड़क,शिक्षा एवं चिकित्सा की योजनाएं शामिल है।
मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि युवा,माता-पिता के साथ-साथ राष्ट्र की सबसे बड़ी आशा हैं।पहले किसान अपने बच्चों को पढ़ाई और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए शहर भेजते थे। परिवार उम्मीद करता था कि बेटा मेहनत कर सरकारी नौकरी प्राप्त करेगा,लेकिन पेपर लीक जैसी घटनाओं से युवाओं और उनके परिवारों के सपने टूट जाते थे।उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने पिछले ढाई वर्षों में राज्य सरकार ने पेपरलीक पर प्रभावी अंकुश लगाया है और एक भी पेपरलीक नहीं हुआ है।

महिला सशक्तीकरण की दिखी प्रेरक तस्वीर

ग्राम विकास चौपाल में महिला प्रभारी मंत्री,महिला संभागीय आयुक्त,महिला कलेक्टर और महिला सरपंच की उपस्थिति प्रेरक रही।मुख्यमंत्री ने इन सभी महिलाओं को मंच पर आमंत्रित किया और महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का आह्वान किया। मुख्यमंत्री के आगमन पर आदिवासी कलाकारों ने पारंपरिक गैर नृत्य के साथ उनका स्वागत किया।मुख्यमंत्री भी कलाकारों के बीच पहुंचे और उनके साथ गैर नृत्य में शामिल होकर उत्साहवर्धन किया।मुख्यमंत्री के आत्मीय व्यवहार और अपनत्व से कलाकार अभिभूत नजर आए।मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम स्थल पर ग्राम रथ का अवलोकन भी किया तथा इससे संबंधित गतिविधियों की जानकारी ली। इस अवसर पर राजस्व मंत्री हेमंत मीणा, सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक,महिला एवं बाल विकास विभाग राज्य मंत्री डॉ.मंजू बाघमार,सांसद सीपी जोशी,विधायक श्रीचंद कृपलानी,अर्जुन लाल जीनगर, चंद्रभान सिंह आक्या एवं सुरेश धाकड़ सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

तमिलनाडु में सियासी अनिश्चितता के बीच बहुमत जुटाने में जुटी टीवीके, विजय ने फिर की राज्यपाल से मुलाकात

चेन्नई।

तमिलनाडु विधानसभा चुनाव में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलने के बाद अभिनेता से नेता बने विजय की पार्टी तमिलगा वेत्री कझगम (टीवीके) सरकार बनाने के लिए समर्थन जुटाने में सक्रिय हो गई है। 234 सदस्यीय विधानसभा में 108 सीटें जीतकर टीवीके सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। कांग्रेस के समर्थन के बाद गठबंधन की संख्या 112 विधायकों तक पहुंच गई है, हालांकि बहुमत के लिए जरूरी 118 के आंकड़े से पार्टी अब भी छह सीट दूर है। सरकार गठन को लेकर जारी राजनीतिक अनिश्चितता के बीच विजय ने मंगलवार को राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर से मुलाकात कर सरकार बनाने का दावा पेश किया था। हालांकि, खबरों के मुताबिक राज्यपाल ने उन्हें बताया कि पर्याप्त संख्याबल साबित करने के बाद ही पार्टी को सरकार बनाने का न्योता दिया जा सकता है। इसके बाद विजय ने बुधवार को फिर राज्यपाल से मुलाकात की। यह बैठक 40 मिनट से अधिक समय तक चली। बैठक के बाद राजभवन की ओर से जारी बयान में कहा गया कि विजय ने स्वीकार किया है कि टीवीके के पास फिलहाल अपने दम पर सरकार बनाने के लिए आवश्यक संख्या नहीं है।

सोमनाथ केवल एक मंदिर नहीं, हमारी सभ्यता का अटूट संकल्प है - पीएम नरेंद्र मोदी

सोमनाथ

वर्ष 2026 की शुरुआत में मुझे सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। यह सोमनाथ मंदिर पर हुए पहले आक्रमण के एक हजार वर्ष बाद भी मंदिर के शाश्वत और अविनाशी होने का पर्व था। अब 11 मई को मुझे एक बार फिर सोमनाथ जाने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। इस बार यह यात्रा पुनर्निर्मित सोमनाथ मंदिर के लोकार्पण की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में है। मैं उस क्षण को फिर जीने जा रहा हूं जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने मंदिर का लोकार्पण किया था। उस दिन, सोमनाथ में विध्वंस से सृजन तक की यात्रा फिर से जीवंत होगी। छह महीनों के भीतर सोमनाथ के इतिहास से जुड़े इन दो अत्यंत महत्वपूर्ण पड़ावों का साक्षी बनना मेरे लिए बहुत सौभाग्य की बात है। सोमनाथ केवल एक मंदिर नहीं, हमारी सभ्यता का अटूट संकल्प है।

सम्राट कैबिनेट- नीतीश के बेटे समेत 32 मंत्री बने

पीएम ने पूर्व सीएम को बुलाया, हाथ पकड़कर पास लाए, नीतीश ने प्रधानमंत्री के कंधे पर हाथ रखा

पटना

सम्राट चौधरी के सीएम बनने के 22 दिन बाद आज गुरुवार को कैबिनेट का विस्तार किया गया। मेगा इवेंट में नीतीश के बेटे निशांत कुमार समेत 32 मंत्री सम्राट कैबिनेट में शामिल हुए।
नई कैबिनेट में बीजेपी से 15, जेडीयू से 13, LJP(R)-2, HAM और RLM से एक-एक मंत्री हैं। 25 मिनट चले इस कार्यक्रम में एक साथ 5-5 विधायकों ने शपथ ली है।
पहली बार में निशांत कुमार, श्रवण कुमार, विजय सिन्हा, लेसी सिंह, और दिलीप जायसवाल ने शपथ ली। निशांत कुमार पहली बार मंत्री बने हैं।
समारोह में PM मोदी भी शामिल हुए हैं। कार्यक्रम के बाद प्रधानमंत्री ने नीतीश कुमार को अपने पास बुलाया। मंच पर उनसे हाथ मिलाया, इस दौरान नीतीश कुमार ने पीएम का कंधा पकड़कर हिला दिया।
कार्यक्रम की शुरुआत में सीधे राष्ट्रगान बजाया गया, जबकि प्रोटोकॉल के हिसाब से पहले राष्ट्रगीत वंदे मातरम् बजाया जाना था।
दो बार बिहार के स्वास्थ्य मंत्री रहे मंगल पांडेय इस बार कैबिनेट में जगह नहीं मिली है, खबर है कि पार्टी में उन्हें बड़ी जगह दी जाएगी।

बीजेपी ने 3 चेहरों को ड्रॉप किया

सम्राट कैबिनेट में बीजेपी कोटे से 15 मंत्रियों ने शपथ ली है। इनमें 5 नए चेहरे हैं, वहीं तीन पुराने लोगों को इस बार मौका नहीं मिला। इनमें बीजेपी के सीनियर लीडर मंगल पांडेय, बेगूसराय के बछवाड़ा से विधायक सुरेंद्र मेहता और प. चंपारण से नारायण प्रसाद का नाम शामिल है।

ऑपरेशन सिंदूर की पहली वर्षगांठ : सेना ने बताई ऑपेरशन की प्लानिंग से लेकर अंजाम तक की कहानी

ऑपरेशन सिंदूर खत्म नहीं, अभी तो शुरुआत है

पाकिस्तान के 100 से ज्यादा जवानों और टेररिस्ट कैंप में 100 से ज्यादा आतंकियों की मौत हुई

कहा-पहलगाम जैसा हमला दोबारा नहीं होने देंगे

लोक टुडे। जयपुर

ऑपरेशन सिंदूर की पहली वर्षगांठ पर भारतीय सेना ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ने यह साफ संदेश दिया कि पाकिस्तान में कोई भी आतंकवादी ठिकाना सुरक्षित नहीं है। यह अभियान अंत नहीं, बल्कि शुरुआत थी। भारत आतंकवाद के खिलाफ लड़ता रहेगा। जयपुर में गुरुवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में सेना ने बताया ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान के 100 से ज्यादा जवानों और टेररिस्ट कैंप में 100 से ज्यादा आतंकियों की मौत हुई है। सेना ने कहा कि पहलगाम हमले में मारे गए हमारे भाई-बहनों को हम वापस नहीं ला सकते, लेकिन यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि ऐसा हमला दोबारा न हो। हमारा ऑब्जेक्टिव क्लियर था और ऑपरेशन के लिए पूरी छूट दी गई थी। प्रेस कॉन्फ्रेंस में लेफ्टिनेंट जनरल जुबिन ए मिनवाला, लेफ्टिनेंट जनरल राजीव घई, एयर मार्शल अवधेश कुमार और वाइस एडमिरल ए एन प्रमोद सहित सेना के कई अधिकारी मौजूद रहे। इससे पहले रक्षा मंत्री राजनाथसिंह का मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा समेत भाजपा नेताओं ने एयरपोर्ट पर स्वागत किया।

साफ संदेश - पाकिस्तान में अब कोई भी आतंकवादी ठिकाना सुरक्षित नहीं :

डायरेक्टर जनरल ऑफ मिलिट्री ऑपरेशन

और डिप्टी चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ राजीव घई ने कहा-ऑपरेशन सिंदूर ने साबित कर दिया कि 'आत्मनिर्भर' केवल एक नारा नहीं है, बल्कि वास्तव में हमारी शक्ति को कई गुना बढ़ाने वाला है। आज हमारे 65' से अधिक रक्षा उपकरण देश में ही बनाए जा रहे हैं। सेना उन्हीं हथियारों का उपयोग कर रही है। ऑपरेशन सिंदूर अभी खत्म नहीं हुआ है, अभी तो शुरुआत है। ऑपरेशन सिंदूर ने यह संदेश दिया कि पाकिस्तान में कोई भी आतंकवादी ठिकाना अब सुरक्षित नहीं है। घई ने दुष्यंत कुमार के शेर सुनाए। कहा- सिर्फ हंगामा करना मेरा मकसद नहीं, मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

भारत आतंकवाद के खिलाफ लड़ता रहेगा। भारत अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हर कदम उठाएगा। 7 मई 2025 को ऑपरेशन सिंदूर के दौरान 7 लक्ष्यों को भारतीय सेना और 2 को भारतीय वायु सेना ने निशाना बनाया था। पाकिस्तान के 100 से ज्यादा जवानों और टेररिस्ट कैंप में 100 से ज्यादा आतंकियों की मौत हुई है। कड़ी मार खाने के बाद विरोधी पक्ष को समझ आई और उन्होंने संघर्ष विराम की मांग की। जब यह अनुरोध आया, तब हमने कार्रवाई रोकी। हम पीछे हटे, लेकिन हमने कमजोरी नहीं दिखाई। हम अपना संदेश दे चुके थे और वह संदेश बिल्कुल स्पष्ट था कि किसी भी दुस्साहस का जवाब दिया जाएगा और आतंकवादी गतिविधियों की कीमत चुकानी पड़ेगी।

एयर मार्शल बोले- ऑपरेशन के लिए पूरी छूट दी गई थी

एयर मार्शल अवधेश कुमार भारती ने कहा कि पहलगाम हमले में मारे गए हमारे भाई-बहनों को हम वापस नहीं ला सकते, लेकिन यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि ऐसा हमला दोबारा न हो। उन्होंने कहा कि हमारा ऑब्जेक्टिव क्लियर था और ऑपरेशन के लिए पूरी छूट दी गई थी। हम हमेशा जिओ और जीने दो के सिद्धांत के साथ जीते हैं। जब हमारी शांति की इच्छा को कमजोरी समझ लिया जाए और हमारी चुप्पी को हमारी अनुपस्थिति मान लिया जाए, तो कार्रवाई करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता। जब हम कार्रवाई करते हैं, तो उसमें किसी तरह की नरमी की गुंजाइश नहीं होती। ऑपरेशन सिंदूर का उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट था। जिसका लक्ष्य पीओके के साथ-साथ पाकिस्तान के अंदर मौजूद आतंकी ढांचे को नष्ट करना था। जब 7 मई 2025 की तड़के हमनें अपने पहले लक्ष्य को भेदा, तो यह भारत की जनता की शक्ति और संकल्प का दुश्मन की धरती तक पहुंचाया गया संदेश था। न तो हमारा कोई मिलिट्री इंफ्रास्ट्रक्चर, न ही सिविलियन इन्फ्रास्ट्रक्चर का नुकसान हुआ। हमनें सभी हमलों को न्यूट्रलाइज कर दिया था। हालांकि जीत हार्ड फैक्ट्स के साथ मिलती है। तथ्य ये है कि हमने उनके 9 आतंकी ठिकाने नेस्तनाबूद किए। 11 एयर फील्ड तबाह किए और 13 विमान गिराए। पूफ हमने सबके सामने रखे हैं। हमने पाकिस्तान के 13 एयर क्राफ्ट बर्बाद कर दिए थे, जो ग्राउंड और हवा में थे। इसमें एक एयर वार्निंग विमान भी था, जिसे 300 किमी ज्यादा दूर से मार गिराया गया।

रीको की पहल से महिंद्रा वर्ल्ड सिटी एवं आसपास के क्षेत्रों में दूर होगी ट्रैफिक समस्या

लोक टुडे। जयपुर

राज्य सरकार की मंशा केवल निवेश को आकर्षित कर उद्योग स्थापित करना ही नहीं, बल्कि उद्यमियों को औद्योगिक क्षेत्रों में बेहतरीन कनेक्टिविटी सहित सभी आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना भी है। रीको राज्य सरकार के अन्य विभागों के साथ बेहतरीन सामंजस्य स्थापित कर इसी दिशा में कार्य कर रहा है। इसी क्रम में महिंद्रा वर्ल्ड सिटी एवं आसपास के क्षेत्र में बढ़ते ट्रैफिक को कम करने के लिये रीको ने निर्णय लिया है कि अजमेर रोड से महिंद्रा सेज को जोड़ने वाली 200 फीट चौड़ी एवं लगभग 4 किलोमीटर लंबी अप्रोच रोड का विकास एवं चौड़ीकरण कर इसे आधुनिक 8 लेन सड़क के रूप में विकसित किया जाएगा।

हाल ही हुई महत्वपूर्ण बैठक में रीको एवं जेडीए के मध्य इस अप्रोच रोड के विकास को लेकर सहमति बनी है। करीब 18.50 करोड़ रुपये की लागत वाली इस परियोजना में रीको और जेडीए 50-50 प्रतिशत खर्च वहन करेंगे। रीको द्वारा कुल खर्च में से लगभग 9.25 करोड़ रुपये दिये जाने की स्वीकृति प्रदान की गई है। इस कार्य को प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र शुरू करने के निर्देश दिए गए हैं। परियोजना के तहत सड़क चौड़ीकरण के साथ डिवाइडर निर्माण, पौधारोपण, फेंसिंग, स्ट्रीट लाइटिंग एवं अन्य विद्युत कार्य भी कराये जाएंगे। सड़क का निर्माण आधुनिक मानकों के अनुरूप किया जाएगा, जिससे आवागमन अधिक सुगम, सुरक्षित और तेज हो सकेगा। गौरतलब है कि महिंद्रा वर्ल्ड सिटी लिमिटेड (जयपुर), रीको एवं महिंद्रा एंड महिंद्रा का संयुक्त उपक्रम है, जहां विशेष आर्थिक क्षेत्र (Special Economic Zone), घरेलू उत्पाद क्षेत्र एवं सामाजिक आधारभूत संरचना क्षेत्र विकसित हैं।

इसमें रीको की 26 फीसदी भागीदारी है। महिंद्रा वर्ल्ड सिटी लिमिटेड (जयपुर) में 100 से अधिक औद्योगिक इकाइयां संचालित हैं, जिनमें करीब 75,000 लोग प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कार्यरत हैं। साथ ही इस क्षेत्र में तेजी से विकसित हो रहे आवासीय प्रोजेक्ट्स के कारण बड़ी संख्या में लोग रह रहे हैं। इस विकास कार्य से इस क्षेत्र के उद्योगों, कर्मचारियों एवं स्थानीय निवासियों को बड़ा लाभ मिलेगा। यातायात दबाव कम होने के साथ लॉजिस्टिक्स एवं औद्योगिक गतिविधियों को भी मजबूती मिलेगी।

रूफ टॉप सौर ऊर्जा में जयपुर डिस्कॉम को एमएनआरई से 60.03 करोड़ की स्वीकृति

लोक टुडे। जयपुर

केन्द्रीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय ने वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान ग्रिड कनेक्टेड रूफ टॉप सोलर क्षमता जोड़ने पर जयपुर विद्युत वितरण निगम को 60 करोड़ रूपए से अधिक की प्रोत्साहन राशि मंजूर की है। मंत्रालय द्वारा निगम को प्रदान की गई यह अब तक की सर्वाधिक प्रोत्साहन राशि है। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार एवं राजस्थान सरकार

द्वारा प्रदेश में रूफ टॉप सौर ऊर्जा को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इससे रूफ टॉप सौर ऊर्जा के प्रति उपभोक्ताओं के रूझान में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अभूतपूर्व पहल पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना लागू होने से इसमें और इजाफा हुआ है। ऊर्जा परिदृश्य में आए इस बदलाव का लाभ जयपुर डिस्कॉम को मिल रहा है। विद्युत वितरण निगम केन्द्रीय नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय को प्रत्येक वित्तीय वर्ष में जोड़ी गई सोलर रूफ टॉप क्षमता के आधार पर प्रोत्साहन राशि का क्लेम प्रस्तुत करते हैं। इसके आधार पर एमएनआरई यह राशि मंजूर करता है। मंत्रालय ने वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान पहले चरण में विभिन्न राज्यों के 14 वितरण निगमों को 1422 करोड़ रूपए की प्रोत्साहन राशि स्वीकृत की है। जयपुर विद्युत वितरण निगम को इस अवधि में 187 मेगावाट अतिरिक्त रूफ टॉप सौर ऊर्जा क्षमता जोड़ने पर 60.03 करोड़ रूपए की राशि प्रदान की गई है। इसके अन्तर्गत वाणिज्यिक एवं औद्योगिक, सामाजिक, राजकीय संस्थाओं एवं घरेलू उपभोक्ताओं द्वारा प्रधानमंत्री सूर्यघर योजना सहित अन्य सभी प्रकार से लगाए गए रूफ टॉप सौर ऊर्जा संयंत्र शामिल हैं। इससे पहले जयपुर डिस्कॉम को रूफ टॉप सौर ऊर्जा क्षमता में बढ़ोतरी के आधार पर वर्ष 2019-20 में 14.98 करोड़, 2020-21 में 23.61 करोड़, 2021-22 में 29.13 करोड़, 2022-23 में 14.94 करोड़ तथा 2023-24 में 22.20 करोड़ रूपए की प्रोत्साहन राशि प्राप्त हुई थी।

सबरीमाला केस, सुप्रीम कोर्ट बोला- हर धार्मिक प्रथा को चुनौती गलत

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को कहा कि अगर लोग धार्मिक प्रथाओं और धर्म के मामलों को अदालत में चुनौती देने लगेंगे, तो इससे धर्म और समाज पर असर पड़ सकता है। कोर्ट ने कहा कि इससे सैकड़ों याचिकाएं आएंगी और हर रिवाज पर सवाल उठने लगेंगे। यह टिप्पणी नौ जजों की संविधान पीठ ने की, जो अलग-अलग धर्मों में धार्मिक आजादी के दायरे और महिलाओं के साथ भेदभाव से जुड़े मामलों की सुनवाई कर रही है। इसमें केरल के सबरीमाला मंदिर से जुड़ा मामला और दाऊदी बोहरा समुदाय का केस भी शामिल है। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को दाऊदी बोहरा समुदाय से जुड़ी 40 साल पुरानी जनहित याचिका (PIL) की वैधता पर सवाल उठाए थे।

पाली निगम कमिश्नर का ऑफिस सील, कार भी जब्त

लेखाधिकारी के ऑफिस में बैठकर करेंगे काम, कोर्ट का आदेश नहीं मानने पर कार्रवाई

लोक टुडे। पाली

कोर्ट ने आदेश नहीं मानने पर गुरुवार को पाली नगर निगम कमिश्नर का ऑफिस सील कर दिया। कार भी जब्त कर ली गई। अब निगम कमिश्नर नवीन भारद्वाज को 11 मई को कोर्ट में पेश होना है। तब तक पूरा ऑफिस सील रहेगा। कमिश्नर नवीन भारद्वाज लेखाधिकारी के ऑफिस में बैठकर काम करेंगे।

कोर्ट ने 8 महीने में दो बार परिवादी विनोद के पक्ष में पट्टा जारी करने का आदेश दिया था। नगर निगम ने आदेश की पालना नहीं की। इस पर परिवादी ने निगम आयुक्त के खिलाफ 7 मई को इजराय पेश कर नगर निगम की संपत्ति कुर्क करने का निवेदन किया। इसके बाद कोर्ट ने आदेश जारी कर निगम आयुक्त

का ऑफिस, कुर्सी, एसी और सरकारी वाहन जब्त करने के आदेश दिए। सेल अमीन रवि गहलोत न्यायिक कर्मचारियों के साथ 2 बजे निगम ऑफिस पहुंचे और कार्रवाई की।

इन आदेशों की नहीं की पालना :

सीनियर एडवोकेट अशोक अरोड़ा ने बताया- परिवादी विनोद तेजी पुत्र गोपाल निवासी अशरफो रजा कॉलोनी सोजत रोड नया गांव पाली ने अपने प्लॉट 615 का पट्टा जारी कराने के लिए नगर निगम पाली में अप्लाई किया था। लंबे समय तक पट्टा जारी नहीं होने पर विनोद ने 2022 में जिला न्यायालय पाली में वाद प्रस्तुत किया। मामले की सुनवाई के बाद जिला न्यायाधीश राजेंद्र कुमार ने 6 सितंबर 2025 को निर्णय पारित करते हुए नगर निगम को 1 महीने के भीतर परिवादी विनोद के पक्ष में पट्टा जारी करने का आदेश दिया था। इसके बावजूद नगर निगम ने आदेश की पालना नहीं की गई। इसके बाद फिर से 5 मई 2026 को 7 मई तक पट्?टा जारी करने का आदेश जारी किया। ऐसा नहीं होने पर निगम ऑफिस वाहन सील करने की कार्रवाई से अवगत करवाया। इसके अलावा आदेश की अवहेलना पर परिवादी विनोद तेजी ने न्यायालय में इजराय पेश कर नगर निगम की संपत्ति कुर्क करने का निवेदन किया। इस पर न्यायालय ने सख्त रुख अपनाते हुए तत्काल प्रभाव से नगर निगम कार्यालय की कुर्सियां, टेबल, एसी तथा आयुक्त के वाहन को कुर्क करने के आदेश जारी किए।

मारपीट मामला: विधायक जयदीप बिहानी के खिलाफ मामला दर्ज, जूली बोले- निष्पक्ष जांच होनी चाहिए

जयपुर

श्रीगंगानगर से भाजपा विधायक जयदीप बिहानी और उनके समर्थकों के खिलाफ सहायक अभियंता जगनलाल बैरवा से मारपीट मामले में आखिरकार 1 हफ्ते के बाद शहर के जवाहर नगर थाने में मामला दर्ज कर दिया गया है. मामला दर्ज होने के बाद विधायक की मुश्किलें बढ़ती हुई नजर आ रही हैं. वहीं, इस मामले में नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने पुलिस कार्रवाई का स्वागत करते हुए कहा कि मामला सत्ताधारी भाजपा विधायक से जुड़ा हुआ है, इसलिए बिना किसी दबाव में आए निष्पक्ष जांच होनी चाहिए. जूली ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा कि भारी दबाव और जन आक्रोश के बाद आखिरकार दलित इंजीनियर जगलाल बैरवा के साथ मारपीट करने के आरोप में भाजपा विधायक जयदीप बिहानी के खिलाफ मामला दर्ज हुआ है। आगे उन्होंने लिखा कि तकरीबन एक हफ्ता लग गया पुलिस को विधायक के खिलाफ मामला दर्ज करने में, जबकि बैरवा के खिलाफ तो तुरंत ही पुलिस एक्शन हो गया था।

एसएमएस अस्पताल में अब शुरू होगी ईवनिंग ओपीडी

प्रमुख शासन सचिव ने स्वास्थ्य सुविधाओं का निरीक्षण कर दिए आवश्यक निर्देश

लोक टुडे। जयपुर

सवाई मानसिंह अस्पताल में मरीजों को सुगमता से उपचार उपलब्ध करवाने एवं क्राउड मैनेजमेंट के लिए अधिक रोगी भार वाले विभागों में ईवनिंग ओपीडी शुरू की जाएगी। पहले चरण में यह शुरूआत मेडिसिन विभाग से होगी।

इसके साथ ही दवा वितरण काउंटरों की संख्या बढ़ाई जाएगी एवं जांच के लिए सैम्पल कलेक्शन हेतु मानव संसाधन बढ़ाया जाएगा। चिकित्सा शिक्षा विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ ने गुरूवार को सवाई मानसिंह अस्पताल में स्वास्थ्य सुविधाओं के निरीक्षण के दौरान इस संबंध में अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सवाई मानसिंह अस्पताल देश के सबसे बड़े एवं नामी अस्पतालों में शामिल है, इसलिए यहां रोगीभार अधिक होना स्वाभाविक है, लेकिन रोगियों को इलाज में किसी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। अधिक समय तक कतारों में नहीं खड़ा रहना पड़े, इसके लिए अस्पताल प्रशासन तात्कालिक इंतजाम सुनिश्चित करने के साथ ही दीर्घकालिक योजना पर भी काम करे।

छाया- पानी के हों पुख्ता प्रबंध :

राठौड़ ने अस्पताल में सामान्य वार्ड एवं अन्य चिकित्सा सेवाओं का भी निरीक्षण किया। उन्होंने हीटवेव एवं तेज गर्मी के दृष्टिगत अस्पताल में कूलिंग के समुचित इंतजाम सुनिश्चित करने तथा रोगी एवं परिजनों के लिए पेयजल व छायादार स्थानों की उपलब्धता के लिए भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि तात्कालिक आवश्यकताओं के लिए नियमानुसार आरएमआरएस के फण्ड का उपयोग किया जाए, लेकिन रोगियों को किसी प्रकार की तकलीफ नहीं हो।

ईवनिंग ओपीडी में वरिष्ठ चिकित्सक की भी ड्यूटी :

राठौड़ ने धन्वंतरि ओपीडी में कार्डियोलॉजी, मेडिसिन एवं आर्थोपेडिक्स विभाग का दौरा कर वहां स्वास्थ्य सेवाओं का जायजा लिया। उन्होंने निर्देश दिए कि जिन विभागों में रोगी भार अत्यधिक रहता है, उनमें वैकल्पिक व्यवस्था के तौर पर ईवनिंग ओपीडी भी शुरू की जाए, ताकि रोगियों को ज्यादा समय तक अस्पताल में नहीं रहना पड़े। उन्होंने प्रथम चरण में मेडिसिन विभाग में शाम 5 से 7 बजे तक ओपीडी सेवाएं शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि शाम के समय भी ओपीडी में वरिष्ठ चिकित्सकों सहित पर्याप्त संख्या में चिकित्सक एवं अन्य स्टाफ मौजूद रहेगा। यह व्यवस्था सफलतापूर्वक लागू होने पर अन्य विभागों में भी ईवनिंग ओपीडी शुरू किए जाने पर विचार किया जाएगा।

जल्द बढ़ाई जाएगी दवा वितरण केंद्रों की संख्या :

प्रमुख शासन सचिव ने दवा वितरण केंद्रों का निरीक्षण करते हुए निर्देश दिए कि रोगीभार को देखते हुए तत्काल प्रभाव से चार से पांच नए काउंटर खोले जाएं। साथ ही, आवश्यक दवा सूची में शामिल शत प्रतिशत दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि जो दवाएं नियमित आपूर्ति के माध्यम से प्राप्त नहीं हों, उनकी नियमानुसार खरीद कर रोगी को उपलब्ध करवाई जाएं। इसके लिए कॉन्फेड आदि संस्थाओं के साथ भी समन्वय किया जा सकता है। उन्होंने ब्लड सैम्पल कलेक्शन सेंटर का भी निरीक्षण किया और यहां मानव संसाधन बढ़ाने के निर्देश दिए, ताकि रोगियों को इंतजार नहीं करना पड़े।

उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा ने की रात्रि चौपाल

जयपुर। गांव,गरीब एवं किसान के उत्थान के संकल्प के साथ मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान सरकार जनकल्याणकारी योजनाओं को धरातल तक पहुंचाने के लिए संकल्पित भाव से कार्य कर रही है।

इसी क्रम में ग्राम रथ अभियान के अंतर्गत बुधवार को उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेम चन्द बैरवा ने दूदू विधानसभा क्षेत्र के बोराज में रात्रि चौपाल में सहभागिता कर ग्रामीणजनों से आत्मीय संवाद किया,ग्राम 2026 की जानकारी दी और विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन के सम्बंध में चर्चा की।उन्होंने ग्रामीणों को की शिक्षा,स्वास्थ्य,कृषि,पशुपालन, पेयजल,सड़क,बिजली एवं सामाजिक सुरक्षा से जुड़ी विभिन्न जनहितकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान की। साथ ही,आमजन की समस्याओं एवं सुझावों को भी सुना।

डॉ.प्रेम चन्द बैरवा ने कहा कि अन्त्योदय की भावना ही सुशासन का मूल आधार है।प्रदेश सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है कि विकास का लाभ प्रदेश के प्रत्येक गांव,ढाणी एवं कस्बे तक पहुंचे तथा हर पात्र व्यक्ति को सरकार की योजनाओं का समुचित लाभ प्राप्त हो।

रात्रि चौपाल में राजेश गुर्जर, ओमाशंकर कुमावत,सुरेंद्र मीणा, जितेंद्र कुमावत, रामेश्वर कड़वा, चेतराम कुमावत, बिरदीचंद अहलावत, राजनारायण शर्मा, भूपेंद्र सिंह भी उपस्थित रहे।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रिक, प्रकाशन, संपादक - नीरज मेहरा द्वारा बोनस ग्राफिक्स, लक्ष्मी नगर, हटवाड़ा मार्ग, अजमेर रोड, जयपुर - 302006 से मुद्रिक एवं 141, दयानन्द नगर, फेज प्रथम झेलना डूंगरी गली नंबर 19, थाना गांधी नगर, जयपुर (राज.) प्रकाशित प्रबंध संपादक - पी.के.बृजवाल, 9950325930, 9571635930 (कानूनी सलाहकार एडवोकेट कैलाशनाथ भट्ट)